IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अबूझमाड़ में जनसंचार साधनों की उपस्थिति: एक विश्लेषण

*डॉ. संजय कुमार

*लेखक भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (आईसीएसएसआर) नई दिल्ली में पोस्ट डॉक्टोरल फेलो हैं

वर्तमान समय में हम जिस दुनिया में जी रहे हैं उसमें संचार और सूचना का सर्वाधिक महत्व है। दूसरे शब्दों में कहें तो हम कह सकते हैं कि **"वर्तमान में हम संचार और सूचना के युग में जी रहे हैं।"**[1] इस समय में संचार की प्रक्रिया और सूचनाओं का आदान–प्रदान हमारे जीवन का अहम हिस्सा है। इसके बगैर व्यक्ति और समाज के विकास की कल्पना बेमानी है। दरअसल संप्रेषण जीवन के साथ जुड़ा हुआ एक अनिवार्य घटक है। इसके बिना जीवन और समाज की कल्पना करना भी बेमानी है। यही वजह है कि वरिष्ठ संचार विशेषज्ञ सी.एल. लायड कहते है कि - **''संप्रेषण ही मानव समाज की संचालन प्रक्रिया को संभव बनाता है।''**[2]

सूचना और संचार की ताकत के जरिये ही दुनिया वैश्विक ग्राम में तब्दील होकर वैश्विक स्तर पर लोगों के लिए विकास की तमाम संभावनाओं के द्वार खोले हैं। वैश्विक स्तर पर ज्ञान–विज्ञान और तकनीक सहित तरक्की के सभी आयामों पर आपसी साझेदारी बढ़ी है और ग्लोबल विलेज की संकल्पना सही सिद्ध हुई है। लेकिन स्वतंत्र भारत में करीब चार हजार वर्ग किलोमीटर में फैला अबूझमाड़ नाम का एक ऐसा क्षेत्र भी है जो आज भी सूचना और संचार क्रांति के प्रभाव से पूरी तरह अछूता होकर वैश्विक ग्राम से अलग एक अबूझ दुनिया की तरह है।

संचार क्रांति और संचार के आधुनिक और अत्याधुनिक उपकरण की बात छोड़िए यहां के निवासियों को अभी यह भी नहीं पता कि समाचार पत्र क्या होता है और टेलीविजन किस उपकरण का नाम है। धूर नक्सल प्रभावित अबूझमाड़ में सड़क नाम की कोई चीज नहीं है और यहां के लंका सहित दर्जनों गांव के निवासियों को अपनी रोजमर्रा की जरूरत को पूरा करने के लिए सत्तर से अस्सी किलोमीटर की यात्रा पैदल ही पूरी करनी पड़ती है। क्योंकि अबूझमाड़ के अंदर कोई बाजार या दुकान नहीं है और लंका से ओरछा की दूरी अस्सी किलोमीटर है जहां अबूझमाड़ के लोगों के लिए एकमात्र साप्ताहिक बाज़ार है।

नक्सल प्रभावित छत्तीसगढ़ राज्य के करीब तीन हजार नौ सौ पांच वर्ग किलोमीटर में फैले अबूझमाड़ क्षेत्र को माओवादियों के लाल गलियारे का केन्द्र कहा जाता है। लेकिन अपने नाम की ही तरह अबूझमाड़ आजादी के 75 सालों बाद भी देश–दुनिया के लिए एक अबूझ पहेली की तरह ही है। अबूझमाड़ का कोई प्रमाणिक राजस्व नक्सा सरकार के पास नहीं है और अब तक अबूझमाड़ का कोई राजस्व व वन सर्वेक्षण नहीं हो पाया है।

अबूझमाड़ छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बस्तर संभाग के नारायणपुर जिले में स्थित है। अबूझमाड़ का कुछ हिस्सा महाराष्ट्र और कुछ हिस्सा आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना में भी पड़ता है। नारायणपुर के ओरछा तहसील को अबूझमाड़ का प्रवेश द्वार कहा जाता है। **"अबूझमाड़ वर्तमान में नक्सलियों का सबसे सुरक्षित गढ़ और नक्सलियों के लाल गलियारे का मुख्यालय भी है क्योंकि यह क्षेत्र आज भी सरकार की पहुंच से करीब करीब पूरी तरह से दूर है और नक्सलियों ने अबूझमाड़ के अधिकांश क्षेत्र को मुक्त क्षेत्र के रूप में घोषित कर वहां जनताना सरकार की स्थापना कर ली है।"**[3]

अबूझमाड़ के अबूझ का मतलब जिसको बूझना संभव ना हो और माड़ यानी गहरी घाटियां और पहाड़। इस तरह अबूझमाड़ एक ऐसा दुर्गम क्षेत्र है जिसे आजतक समझा–बूझा नहीं जा सका है। **"अबूझमाड़ और इसके निवासी आज तक अपने आदिकालीन स्वरूप में है। चूंकि यहां रहने वाले माड़िया आदिवासी बाहरी लोगों से संपर्क रखना पसंद नही करते, इस कारण अभी तक यहां पायी जाने वाली पेड़ पौधों और वन्य प्राणियों की संख्या और प्रकार के बारे में सही जानकारी नही है। इसकी सीमा पर रहने वाले व्यापारी आज भी आदिवासियों से तेल और नमक का वनोपज के साथ विनिमय करते है। अबूझमाड़ में रहने वाले आदिवासियों को अबूझमाड़िया या हिल माड़िया कहा जाता है।"**[4] **"अबूझमाड़ माओवादियों के लाल गलियारे के केन्द्र और माओवादियों के सबसे सुरक्षित ठिकानों में से एक है। चूंकि अबूझमाड़ की सीमाएं आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र और उड़ीसा से लगती है लिहाजा माओवादियों के लिए यह उपरोक्त नक्सल प्रभावित राज्यों में हिंसा करने के बाद छुपने की सबसे मुफीद जगह है।"**[5]

अबूझमाड़, देश का ऐसा इलाका है, जहां 15 वीं शताब्दी के बाद पहली बार राजस्व सर्वेक्षण का काम तत्कालीन रमन सरकार के कार्यकाल में शुरू किया गया था लेकिन माओवादियों के विरोध को देखते हुए यह काम पूरा नहीं हो पाया। दरअसल जीपीएस और गूगल मैप के इस दौर में भी अबूझमाड़ में कुल कितने गांवों में किसके पास कितनी जमीन है, चारागाह या सड़कें हैं या नहीं या जीवन के दूसरी ज़रूरी चीजों की उपलब्धता कैसी है, इसका कोई रिकार्ड कहीं उपलब्ध नहीं है। ये गांव कहां हैं या इनकी सरहद कहां है, यह भी पता नहीं है।

इतिहास के पन्नों को पलटने से पता चलता है कि अबूझमाड़ में पहली बार अकबर के ज़माने में राजस्व के दस्तावेज एकत्र करने की कोशिश की गई थी। लेकिन घने जंगलों वाले इस इलाके में सर्वे का काम अधूरा रह गया। **"ब्रिटिश सरकार ने 1909 में लगान वसूली के लिये इलाके का सर्वेक्षण शुरू किया लेकिन वह भी अधूरा रह गया। हालत ये हुई कि अबूझमाड़ के इलाकों में बसने वाली आदिवासी आबादी आदिम हालत में जीवन जीती रही और 80 के दशक में माओवादियों ने इस इलाके में प्रवेश किया और फिर इसे अपना आधार इलाका बना लिया।"**[6]

2009 से पहले तक अबूझमाड़ के इलाके में प्रवेश के लिये कलेक्टर से अनुमति लेने का नियम था जिसे 2009 में तत्कालीन रमन सरकार ने खत्म किया। **"अबूझमाड़ देश के सर्वाधिक रहस्यमयी जगहों में से एक है।"**[7] अबूझमाड़ में रहने वाले लोगों के साथ सरकार का कोई संवाद नहीं है। यहां का आदिवासी जन–जीवन आज भी आदिम युग में है।

अबूझमाड़ में संचार माध्यमों की उपस्थिति

प्रसिद्ध संचार शास्त्री मार्शल मैक्लुहान ने कहा है कि– माध्यम ही संदेश है। मैकलुहान के मतानुसार **''संदेश से बढ़कर संदेश देनेवाला माध्यम महत्वपूर्ण है।''**[8] क्योंकि यदि माध्यमों की मौजूदगी नहीं है तो संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं पहुंच सकेगा। लेकिन दुर्भाग्य से अबूझमाड़ के लोगों को संप्रेषण के आधुनिक और अत्याधुनिक सुविधाएं तो छोड़ दीजिए, उन्हें संचार के सर्वसुलभ माध्यम भी उपलब्ध नहीं है। यही वजह है कि वे आज तक देश–दुनिया से पूरी तरह से कटे हुए है। छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के माओवाद प्रभावित अबूझमाड़ में संचार के आधुनिक संसाधनों)उपकरणों(की उपस्थिति के तहत हम जिन संप्रेषण माध्यमों की चर्चा करेंगे वे इस प्रकार है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

संप्रेषण के इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के अन्तर्गत वे सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को शामिल किया जाता है जिसके माध्यम से संदेशों को स्रोत से प्राप्तकर्ता तक पहुंचाया जाता है। टेलीग्राफ के आविष्कार के साथ ही मानव समाज को संचार का पहला इलेक्ट्रांनिक माध्यम मिला था जिसके बाद इसकी मदद से दूर–दराज के क्षेत्रों में त्वरित गति से सूचना का सम्प्रेषण संभव हो सकता था। लेकिन आज संप्रेषण के इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के रूप में हमारे पास टेलीफोन, रेडियो, वायरलेस, सिनेमा, टेपरिकार्डर, टेलीविजन, वीडियो कैसेट रिकार्डर, कम्प्यूटर, लैपटांप, मोडम, इंटरनेट, सीडी/डीवीडी प्लेयर, पॉडकास्टर जैसे मीडिया माध्यम मौजूद है।

लेकिन नक्सल प्रभावित अबूझमाड़ की बात की जाए तो यहां के लोग संचार के उपरोक्त साधनों से करीब–करीब पूरी तरह से वंचित हैं। स्थिति यह है कि यहां के निवासियों को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम टेलीविजन और रेडियो के बारे में भी जानकारी नहीं है।

शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के दौरान अबूझमाड़ के चयनित 310 लोगों से अनुसूची के माध्यम से बातचीत की जिसमें उत्तरदाताओं से पूछा गया कि क्या टेलीविजन में अबूझमाड़ से जुड़ी खबरें देखने को मिलती हैं? इस प्रश्न के जवाब में 21.61 प्रतिशत उत्तरदाता ने कहा टेलीविजन क्या होता है? यानी स्पष्ट है कि लोग सूचना क्रांति में मौजूदा युग में भी संचार से सर्वाधिक सशक्त माध्यम टेलीविजन से अनजान है। एक अन्य सवाल के जवाब में अबूझमाड़ के 19.35 प्रतिशत उत्तरदाताओं को पता ही नहीं था कि रेडियो क्या होता है? इससे स्पष्ट होता है कि अबूझमाड़ के निवासियों तक संचार के सर्वाधिक सशक्त माध्यम टेलीविजन और रेडियो की भी पहुंच नहीं है।

प्रिंट मीडिया

अबूझमाड़ में प्रिंट मीडिया की मौजूदगी नहीं है यह कहा जाए तो बहुत ज्यादा अतिशयोक्ति नही होगी। स्वतंत्र भारत के इस बड़े भू–भाग में अब तक किसी प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना नहीं हो पाई है। बताया जाता है कि माओवादियों के इस सबसे सुरक्षित क्षेत्र में माओवादियों के द्वारा प्रभात समेत करीब आधा दर्जन पत्रिकाओं का प्रकाशन छोटे प्रिंटिग प्रेस मशीन के द्वारा किया जाता है लेकिन आजाद भारत की सरकार की तरफ से अब तक यहां ऐसी किसी भी सुविधा का विकास और विस्तार नहीं किया जा सका है।

चूंकि प्रिंटिंग प्रेस ही नहीं है तो अबूझमाड़ से किसी पत्र–पत्रिका के प्रकाशन की बात सोचना ही गलत होगा। अब तक अबूझमाड़ से किसी भी पत्र पत्रिका का प्रकाशन नहीं हो रहा है। यहां तक की इस क्षेत्र में पत्र–पत्रिकाओं की पहुंच भी सुनिश्चित नहीं हो पाई है।

प्रकाशन की बात को अगर किनारे रखकर उपलब्धता और प्रसार की बात भी करें तो भी अबूझमाड़ में पत्र–पत्रिकाओं की उपलब्धता और प्रसार की स्थिति न के बराबर है। अबूझमाड़ के अंदर के गांवों में पत्र–पत्रिकाओं की पहुंच है ही नही। अबूझमाड़ तहसील के मुख्यालय में भी समाचार पत्रों की उपस्थिति न के बराबर ही है।

स्थानीय स्तर पर अबूझमाड़ के मुख्यालय ओरछा में विभिन्न समाचार पत्रों की करीब तीस से चालीस प्रतियां प्रतिदिन पहुंचती है। वो भी यहां के लोगों को समय पर नहीं मिल पाता है। बताया जाता है कि समाचार पत्र पहले नारायणपुर आते है और फिर नारायणपुर से ओरछा आता है। इस तरह से जो समाचार पत्र लोगों को सुबह पांच से छह बजे के बीच मिल जाता है वे ओरछा के चुनिंदा लोगों को दिन के ग्यारह से बारह बजे के बीच मिलते हैं। कभी कभी समाचार पत्र न भी आता है। समाचार पत्रों के अतिरिक्त पत्रिकाओं की बात करें तो अबूझमाड़ में पत्रिकाओं की उपस्थिति और प्रसार भी नहीं है।

अबूझमाड़ में समाचार पत्रों की उपस्थिति को लेकर किए गए एक अध्ययन से संबंधित एक प्रश्न के जवाब में केवल 10.32 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे समाचार पत्र पढ़ते है जबकि 42.90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे समाचार पत्र नहीं पढ़ते है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह कि अबूझमाड़ के 32.26 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि अखबार क्या होता है? यानी यहां की एक बड़ी आबादी को आज भी समाचार पत्रों के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

परंपरागत मीडिया

''पारंपरिक माध्यम ग्राम्य संस्कृति की देन है जिसकी मौलिकता तथा विश्वसनीयता अटूट है। जनसंचार के पारंपरिक माध्यम देशवासियों के धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक जीवन के अत्यंत निकट होते हैं। इनकी विषय–वस्तु जनसामान्य की परंपरा, रीति–रिवाज, उत्सव और समारोह से सम्बद्ध बातें होती है जिसमें रोचकता और अपनापन होता है। 'निज कवित्त केहि लागि न नीका। सरस होहि अथवा अति फीका' के अनुरूप अपनी बातें अपने आदिम रूप में सभी को प्रिय होती है।''[9]

छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बस्तर संभाग में संप्रेषण के पारंपरिक माध्यम बेहद प्रभावी है। बात चाहे घोटुल की करें या स्थानीय स्तर पर होने वाले सामाजिक पंचायत, पर्व–त्योहार अथवा साप्ताहिक बाज़ार और मेले–मड़ई की, सभी स्थानीय स्तर पर सूचना संप्रेषण, मनोरंजन और शिक्षा के प्रमुख माध्यम के रूप में अपनी पहचान रखते है। लेकिन हिंसा की वजह से अबूझमाड़ के कई पारंपरिक माध्यमों का प्रभाव कम हो गया है क्योंकि संवाद की पारंपरिक प्रक्रिया में भय व्याप्त होने से संवाद की पूरी प्रक्रिया प्रभावित हुई है।

सोशल मीडिया

पिछले तकरीबन दो दशक से भारत समेत विश्व को किसी और चीज ने उतना नहीं बदला, जितना मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने बदल दिया है। मोबाईल सहित सोशल मीडिया प्लेटफार्म ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब समेत अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्म ने संचार ही नहीं, दोस्ती और रिश्ते तक को प्रभावित किया है। देश में अब मोबाइल बात करने का माध्यम भर नहीं है, बल्कि यह मनोरंजन, खबरों, सूचनाओं इत्यादि के मामले में परंपरागत संचार माध्यमों को कड़ी टक्कर देते हुए बहुत आगे निकल गया है।

टेलीकॉम कंपनी एरिक्सन के एक शोध से पता चलता है कि "स्मार्टफोन पर समय बिताने में भारतीय पूरी दुनिया में सबसे आगे हैं। एक औसत भारतीय स्मार्टफोन प्रयोगकर्ता रोजाना तीन घंटा 18 मिनट इसका इस्तेमाल करता है। इस समय का एक तिहाई हिस्सा विभिन्न तरह के ऐप के इस्तेमाल में बीतता है। एप इस्तेमाल में बिताया जाने वाला समय पिछले दो साल की तुलना में 63 फीसदी बढ़ा है। स्मार्टफोन का प्रयोग सिर्फ चैटिंग एप या सोशल नेटवर्किंग के इस्तेमाल तक सीमित नहीं है, लोग ऑनलाइन शॉपिंग से लेकर सब तरह के व्यावसायिक कार्यों को स्मार्टफोन से निपटा रहे हैं।"[10]

लेकिन दुर्भाग्य से फाईव–जी सुविधा के इस दौर में भी अबूझमाड़ के निवासियों के लिए मोबाइल नेटवर्क और इंटरनेट की सुविधा नगण्य क्षेत्रों में ही उपलब्ध है। अबूझमाड़ के केवल ओरछा में मोबाइल नेटवर्क की सीमित सुविधा उपलब्ध है जबकि अबूझमाड़ का करीब नब्बे फीसदी क्षेत्र आज भी मोबाइल नेटवर्क से दूर है। जाहिर है ऐसी स्थिति में यहां के निवासियों के लिए सोशल मीडिया भी अबूझमाड़ की तरह की एक अबूझ पहेली है।

''विकास और आधुनिकीकरण में जनसंचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका है। विकास और सूचना एक दूसरे के पूरक है। बिना सूचना के विकास के द्वार नहीं खुल सकते।"[11] महान समाजशास्त्री अरस्तु ने भी कहा है कि– ''मनुष्य समाज में रहकर ही अपना विकास कर सकता है लेकिन इसके लिए जरूरी है कि समय पर सूचना मिलती रहे।"[12] लेकिन आजादी के पचहत्तर साल बाद भी अबूझमाड़ के लोगों तक संचार के पारंपरिक माध्यमों की उपलब्धता न होना एक विचारणीय विषय है।

संदर्भ ग्रंथ सूचिः–

1. रायुडू ,डॉ. सी.एस ,.कम्युनिकेशन ,हिमालया पब्लिशिंग हाउस ,रामदूत ,भालेराव मार्ग ,गिरगांव ,मुम्बई .400004- ,2003पृष्ठ.48-
2. सिंह ,डॉ.श्रीकांत ,सम्प्रेषण प्रतिरूप एवं सिद्धांत ,भारती पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स ,लखेश्वर काम्पलेक्स ,अवध विश्वविद्यालय के पास ,इलाहाबाद रोड ,फैजाबाद ,उत्तर प्रदेश.2001, पृष्ठ -6.
3. सक्सेना विवेक, सुशील राजेश, नक्सली आतंकवाद, प्रभात प्रकाशन, 4-11, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002, वर्ष-2010, पृष्ठ-38.
4. https://www.mpinfo.org/MPinfoStatic/hindi/factfile/jankamar.asp
5. https://www.bbc.com/hindi/india/2013/11/131110_chhatisgarh_road_va
6. https://www.bbc.com/hindi/india-39792451.
7. https://www.jagran.com/news/national-abujmarh-of-chhattisgarh-is-one-of-the-most-mysterious-places-in-the-world-jagran-special-18083361.html
8. तिवारी, डॉ. अर्जून, संपूर्ण पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी- 221001, 2007, पृष्ठ-215.
9. जगदलपुरी, लाला, बस्तरः लोक-कला-संस्कृति, विश्व भारती प्रकाशन, धनवटे चेम्बर्स, सीताबर्डी, नागपुर, 440012, 2011, पृष्ठ-219.
10. http://www.livehindustan.com/news/editorial/guestcolumn/article1-mobile-phone-market-behavior-relationships-57-62-465013.html#sthash.wFjRHm1k.dpuf.
11. तिवारी ,डॉ .अर्जुन ,संपूर्ण पत्रकारिता ,विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक ,वाराणसी ,2007 ,221001 -पृष्ठ281-.
12. तिवारी ,डॉ .अर्जुन ,जनसंचार समग्र ,उपकार प्रकाशन2 ,/11 ए ,स्वदेशी बीमा नगर ,शाह सिनेमा के सामने ,आगरा -282002 ,2009 ,पृष्ठ-313.